International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 853-854

भारतीय विदेश नीति का स्वरूपः पंचशील और गुटनिरपेक्षता

आशुतोष त्रिपाठी
शोधछात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

किसी भी देश की विदेश नीति एक विशिष्ट आंतरिक व बाह्य वातावरण के स्वरूप द्वारा काफी हद तक निर्धारित होती है। इसके अलावा इतिहास, विरासत, व्यक्तिगत विचारधारा विभिन्न संरचनाओं आदि का प्रभाव भी इस पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। 15 अगस्त 1947 को आजाद हुए भारत को अपनी विदेश नीति के निर्धारण का पूर्णता के साथ अधिकार मिला। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की स्वतंत्रता एक युगान्तकारी घटना थी। वह एशिया विशेषकर दक्षिण एशिया में एक नये युग की शुरूआत थी। भारत की आबादी के समय से पहले ही तात्कालीन सोवियत संघ और पश्चिम गुटों के बीच विश्व का ध्रुवीकरण हो चुका था। इस परिस्थितियों में या तो भारत किसी एक ध्रुव के साथ हो जाए या फिर अपने स्वतंत्र पथ विकसित करें।

लेकिन भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्तों और उद्देश्यों को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को सही प्रकार से समझना होगा। संस्कृति में दो महत्वपूर्ण विचारधाराए प्रचलित रही है। एक मित्रता, सहयोग, शांन्ति, विश्व बंधुत्व व अहिसा का, जिसका विकास अशोक महात्मा बुद्ध व गॉधी के विचारों के रूप में हुआ हैं। यहॉ साध्य के साथ ही साथ साधनों की पवित्रता पर भी बल दिया। वही दूसरी कौटिल्य की नीति है, जिसमें यर्थाथवाद व शक्ति के महत्व पर बल दिया जाता है। यहा अंतिम साध्य की प्राप्ति हेतु किसी भी साधन के औचित्य को सही माना गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति के निर्माण में प्रथम परंपरा का पालन किया है। हालांकि बदलते विश्व के परिदृश्य में भारत में आदर्शवाद के साथ–साथ यर्थाथवाद की नीतियों को भी आत्मसात किया है।

भारत को विदेश नीति के निर्धारक तत्वों में भी उसकी संस्कृति और विरासत की स्पष्ट छाप है। किसी को भारत की गहन सभ्यता विदेशज और रहस्यमीय प्रतीत हो सकती है। परन्तु इसके विकास की अनेक कारकों ने आकार दिया। वैसे कि उग्र जलवायु स्थितिया, लोगों की विविधता, परस्पर संघर्षरत छोटे–छोटे राजनीतिक साम्राज्यों का इतिहास, धार्मिक और दार्शनिक विचारों की सहनशीलता तथा जटिल भाषायी एंव ज्ञान का विकास जिसके परिणामस्वरूप एक प्रादेशिक एवं आखिल भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ। इन ऐतिहासिक, राजनीतिक व सामजिक आर्थिक कारको ने संस्कृतियों के जटिल सम्मिश्रण को तैयार किया। जिन्होने बीच में ही विवाद और समझौते को जारी रखा जो मौजूदा रूप में भारत की विदेश नीति से प्रतिबंबित होता हैं। परिणाम स्वरूप ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता आन्दोलन एवं समाज के बहुलवादी रूप के साथ–साथ सहनशीलता, अहिंसा, साहस व साधनों की तुलना जैसे परंपरावादी मूल्य भारत की विदेश नीति को दूरदर्शिता प्रदान करते है। फिर भी विदेश नीति के निर्धारक तत्वों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है।

- गुटबन्दियॉ–शीत युद्ध कालीन परिस्थितियों में विश्व प्रमुख रूप से दो गुटों में विभक्त था। एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी गुट तथा दूसरी तरफ सोवियत संघ के नेतृत्व में पूर्वीगुट। ब्रिटिश उपनिवेश से स्वतंत्रता पाए भारत को ऐसी परिस्थितियों में अपने लिए स्वंतत्र विदेश नीति का निर्माण एक कठिन चुनौती थी।
- इसके अतिरिक्त भारत की भौगोलिक स्थिति भी समस्या को और जटिल बना रही थी। उत्तर में भारत साम्यवादी देशों रूस और चीन के बिल्कुल समीप है। इसके आलावा भारत अभी पश्चिमीगुट के देश ब्रिटेन से स्वतंत्र हुआ था। भारतीय सेना का संगठन भी पाश्चात्य ढंग पर हुआ था। साथ ही भारत से अलग हुए पाकिस्तान की तरफ से भी सीमा पर चुनौती पेश की जा रही थी। अतएव विदेश नीति निर्धारित में भौगोलिक स्थिति पर भी ध्यान देना आवश्यक था।
- भारतीय विदेश नीति निर्धारण में विचारधारा का भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। तत्कालिन स्थिति में कांग्रेस ही भारत को दर्शित कर रहा था। उनकी विचारधारा स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही शांन्तिपूर्ण सह जीवन का समर्थन तथा साम्राज्यवाद और प्रजातिय विभेद का घोर विरोध करना था। सत्ता सीन होने के बाद कांग्रेस की इस विचारधारा की प्रभाव विदेश नीति पर पड़ना ही था।
- इसके अतिरिक्त भारतीय विदेश के निर्धारण में आर्थिक तत्वों का भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। भारत में स्थित संसाधन और उनके समुचित उपयोग के लिए विदेशी सहायता की भी आवश्यकता थी। साथ ही किसी देश के विकास के लिए शांन्ति और स्थायित्व एक महत्वपूर्ण तत्व होते है। अतः इसको बनाए रखना भी एक चुनौती थी।
- भारतीय विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्न रूपो से प्रदर्शित हुए है। किसी भी राष्ट्र के लिए अपनी सुरक्षा व प्रभुसत्ता की रक्षा करना सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। सुरक्षा राष्ट्र के अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व की गारंटी देता है। राष्ट्रीय विकास उसकी महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है। तथा एक सुव्यवस्थित विश्व व्यवस्था इसके स्वतंत्र उपस्थिति और उन्मुख विकास के लिए आवश्यक होता है। भारत के सन्दर्भ में राष्ट्रीय सुरक्षा का तात्पर्य व्यापक अर्थो में देश की स्वंतत्रता, विकास, सैन्य गठबन्धनों का विरोध, पड़ोसी राज्यों से मित्रता पूर्वक सम्बन्ध साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी नीतियों का विरोध सम्मिलित हैं।

2. विदेश नीति का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य आर्थिक विकास से संबंधित है। सर्वप्रथम अपनी राष्ट्रीय क्षमता का विकास करना होगा, जो मूलतः तीन जनंसख्या, प्राकृतिक संसाधन तथा तकनीकी ज्ञान पर निर्भर करता है। इसके पश्चात् संवैधानिक

व्यवस्था तथा आर्थिक विकास की विचारधारा के सन्दर्भ में राज्य की भूमिका तय करनी होगी।

3. प्रत्येक देश को अपनी विदेश नीति का संचालन एक विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में करना पड़ता है। विदेश नीति का प्रमुख कार्य अपने राष्ट्रीय हितो की पूर्ति हेतु उनके अनुकूल विश्व व्यवस्था की रचना करना होता है। राष्ट्रो के साथ अन्तःक्रिया भारतीय विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
4. इसके अतिरिक्त भारतीय विदेश नीति का अन्य उद्देश्य उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, रंगभेद का विरोध करना है। साथ ही विश्व में तेजी से फैल रहे शस्त्रों की दौड़ को कम करके निःशस्त्रीकरण का समर्थन करना प्रमुख उद्देश्य रहा है।
5. इसके साथ ही नव स्वतंत्र देशों के साथ खड़ा रहना, एशिया में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका विशेषकर दक्षिण एशिया में अपनी सम्भव और मैत्रीपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराना, भारतीय विदेश नीति का उद्देश्य रहा है। साथ ही भारत संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी निबार्ध आस्था व्यक्त करता रहा है। भारतीय विदेश नीति का एक प्रमुख लक्ष्य भारतीय मूल एवं प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा रहा है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु भारतीय नीति निर्माताओं ने विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्तों की रचना की। जिसमें गुटनिरपेक्षता, पंचशील प्रमुख है, साथ ही यथार्थवाद गत्यात्मकता और अनुरूपता तथा शांन्तिपूर्ण सह अस्तित्व को प्रमुख स्थान दिया गया है।

गुटनिरपेक्षता : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सर्वाधिक प्रमुख तथ्य था, संसार का दो विरोधी गुटों में बट जाना, एक गुट का नेता संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दूसरे का सोवियत संघ था। अभी द्वितीय विश्व युद्ध खत्म भी नही हुआ था कि संसार इन विरोधी खेमों बट गया इन्हीं परिस्थितियों में भारत का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जन्म हुआ। भारत के समक्ष दो मार्ग थे या तो किसी गुट से मिलकर इस संघर्ष क्षेत्र को और अधिक व्यापक करने में योगदान या फिर गुटबन्दियों से पृथक रहकर स्वतंत्र निर्णय शक्ति का विकास करे। भारत के राष्ट्रीय हित में द्वितीय मार्ग ही श्रेष्ठ था और उसने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनायी। गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू व केन्द्र बिन्दू है। मुख्यतः भारत ने इसको निम्न कारणो से अपनाया। प्रथम यह भारत की पंरपरा, सहनशीलता व बाहुल्य की विचाराधारा के अनूकूल है।द्वितीय यह भारत की स्थिति के अनुरूप है। तृतीय यह नव स्वतंत्र राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु।

संविधान परिषद में बोलते हुए पं0 नेहरू जी ने जो इस नीति के वास्तुकार थे, कहा था हम लोगो ने दोनो में से किसी भी गुट में शामिल न होकर विदेशी गुटो से अलग रहने का प्रयास किया है।

वस्तुतः गुटनिरपेक्षता की नीति के कई पहलू है। इसे शीतयुद्ध व उससे सम्बद्ध गुटबंदियों से पृथक रहने की नीति माना गया है। साथ ही इसे भारत की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाने वाला सिद्धान्त भी कहा गया। फिर भी इस नीति की स्पष्ट व्याख्या नेहरू जी के शब्दों के सन्दर्भ में योग्यतानुसार आँकतें है तथा विश्व शांति व अन्य उद्देश्यों के सन्दर्भ में जो उचित हो, वह निर्णय देती है।

पंचशील : पंचशील बौद्ध धर्म का एक पारिभाषिक शब्द है। जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गौतम बुद्ध में किया था। बौद्ध धर्म स्वीकार करके जो व्यक्ति/भिक्षु बनता था, उसको पाँच व्रतों को धारण करना पड़ता था, जिसे पंचशील कहा जाता था। इसका शाब्दिक अर्थ है ''आचरण के पाँच सिद्धान्त। भारतीय विदेश नीति में पंचशील के पाँच सिद्धान्तों का निर्माण किया जो कि भारत की शांतिप्रयता का द्योतक है। नेहरू जी अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति को केवल कल्पना तक ही सीमित नही करना चाहते थे, बल्कि विश्व शांति हेतु उसे व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहते थे। इसीलिए इस नीति के क्रियान्वयन हेतु शांतिपूर्ण सहआस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। पंचशील के सिद्धान्तों को सर्वप्रथम 24 अप्रैल 1954 के भारत–चीन व्यापारिक समझौते की प्रस्तावना में प्रतिपादित किया गया जिसे बाद में 28 जून 1954 को चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान जारी संयुक्त घोषणापत्र में दोहराया गया। ये सिद्धान्त निम्नलिखित है।

1. एक दूसरे की प्रादेशिक व सर्वोच्च सत्ता के लिए परस्पर सम्मान की भावना।
2. अनाक्रमण।
3. एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
4. समानता व पारस्परिक लाभ।
5. शांतिपूर्ण सहआस्तित्व।

नहेरू जी के लिए यह सिद्धान्त भारत–चीन संबंधों व सहयोग तक ही सीमित नहीं था, अपितु यह भारत के सभी पड़ोसी राज्यों तथा विश्व के राष्ट्रो के मध्य संबंध निर्धारण का एक उपयोगी सिद्धान्त था। एक प्रकार से यह सिद्धान्त भारत द्वारा संघर्ष व युद्ध के विकल्प के रूप में चीन, अपने अन्य पड़ोसी राज्यों तथा विश्व राष्ट्रों हेतु शांति स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

पर इन सिद्धान्तों की स्थापना और ऊँचे आदर्शों के उपरान्त भी भारत को सर्वाधिक गंभीर और राजनीतिक तथा विदेश नीति संबंधी बाधा तब झेलनी पड़ी कि सन् 1962 में चीन से भारत पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया। जब क्षेत्रिय महात्वकांक्षा के स्पष्ट संकेत मिल रहे थे, तब हमने चीन के विरूद्ध कड़ा रूख नही अपनाया। भारत हमेशा से क्षेत्रिय खतरे (पाकिस्तान) को महत्वपूर्ण स्थान देता रहा पर जबकि अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिया सामजस्य पूर्ण नही थी।

फिर भी निर्णायक प्रश्न यह है कि भारत की सामूहिक और आंतरिक व्यवस्थाओं में क्या कमियाँ विद्यमान था। शायद हमने अपने अहम भाव में यर्थाथवाद की उपेक्षा की।

बाद में परवर्ती कालों में विदेश नीति के रूख में परिवर्तन आया और हमने आदर्शवाद तत्वों के अलावा अपनी विदेश नीति में यार्थावादी तत्वों को भी शामिल किया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हमें अपनी ताकत और सीमाओं का वास्तविक धरातल पर आकलन करना होगा, तथा क्षेत्रीय और वैश्विक समीकरणों के संबंध में अपनी स्थिति सुनिश्चित करनी होगी। यदि हम अपनी विदेशनीति को व्यवहारिक और सोउद्देश्य पूर्ण बनाना चाहते हैं तो ऐसा आकलन करना अनिवार्य होगा तथा क्योंकि हमें अपने राष्ट्रीय हितों के प्रति जवाबदेह होना है।

सन्दर्भ

1. डा0 वर्मा, दीनानाथ, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012 पृ0 (241–274)
2. यादव, आर0एस0, भारत की विदेश नीतिः एक विश्लेषण; किताब महल, इलाहाबाद, 2005 पृ0 (14–22)
3. विस्वाल, तपन, ''अंन्तर्राष्ट्रीय संबंध'', ओरियंट ब्लैकस्वान नई दिल्ली 2016।
4. दीक्षित जे0एन0 'भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2013 पृ0 328